ईसाई धर्म

[स्वामी सत्यभक्त]

*
* * *
*

संस्करण]

[मूल्य ।-) आना

प्रकाशक के दो शब्द

इस पुस्तक में महात्मा ईसा के उपदेश और उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय है। दुर्भाग्य यह है कि जो महात्मा करोड़ों लोगों के जीवन में प्राण की तरह समा जाते हैं, उनके जीवन-परिचय ठीक रूप में नहीं मिलते। कुछ तो भक्त लोग उसे ऐसा अतिरंजित कर देते हैं कि वह अविश्वसनीय हो जाता है, कुछ इसलिये विस्मृत हो जाता है कि उनके ज़माने के लोगों ने उन्हें याद रखने लायक महत्व ही नहीं दिया था। मनुष्य तो कब्र पर ही फूल चढ़ाया करता है।

फिर भी महात्मा ईसा का परिचय जैसा कुछ उपलब्ध है उसे छानकर उसकी अस्वभाविकता हटाकर इस पुस्तक में दिया गया है, इससे ईसाई-धर्म को समझने में बड़ा सुभीता होगा। केवल उपदेशों से ही कोई धर्म ठीक ठीक नहीं समझा जाता। धर्म-संस्था तो किसी महात्मा के जीवन की फैली हुई छाया है। उस महात्मा को ठीक ठीक समझे बिना उस संस्था को समझना कठिन होता है, इसलिए यहां पूर्वार्ध में महात्मा ईसा का स्वाभाविक विश्वसनीय और निष्पक्ष जीवन-चरित्र दिया गया है और उत्तरार्द्ध में उनके उपदेशों का संग्रह।

महात्मा ईसा क्रान्तिकारी थे, सुधारक थे, साहसी थे, सेवक थे, दयालु थे, छोटे कुल में पैदा होने पर भी गौरव के शिखर पर पहुंचे थे। उन्होंनें रूढ़ियों को तोड़ डाला, हज़रत मूसा के जाति-धर्म के स्थान पर मानव-धर्म का विधान किया। दीनों और गरीबों को छाती से लगाया—वे एक जीवित उपदेश बने। दो हज़ार वर्ष

बाद भी आज का जमाना उनके जीवन से और उपदेशों से बहुत कुछ सीख सकता है।

महात्मा ईसा सरीखे महापुरुष विश्व की विभूति होते हैं, पर उनको हमने सम्प्रदायों में कैद कर डाला है और उनके नाम पर मानवता के टुकड़े टुकड़े कर दिये हैं। इससे बढ़कर उन के जीवन का अपमान और क्या हो सकता है! सत्यसमाज महात्माओं के इस अपमान से दुनिया को बचाना चाहता है और मानवता के टुकड़ों को जोड़ना चाहता है। अगर हम निष्पक्ष दृष्टि से सभी महात्माओं के जीवन को और उनके उपदेशों को समझें तो हम समझ जायेंगे कि सर्व-धर्म-समभाव के बिना हम धर्म को समझ ही नहीं सकते—पा ही नहीं सकते। यह पुस्तक इसी कार्य की सिद्धि के लिए एक प्रयत्न है।

सत्यसमाज के संस्थापक पूज्य कर्मयोगी श्री सत्यभक्तजी ने प्रायः सभी मुख्य मुख्य धर्मों का परिचय दिया है। आपने पुस्तकों का ही नहीं मानव-हृदयों का भी गंभीर अध्ययन किया है। आप के अनुभव गहरे हैं और विचारकता बहुत उँचे पैमाने की है। आप का सर्व-धर्म-समभाव, सर्व-जाति-समभाव और सामाजिक क्रान्ति का सन्देश अपने ढंग का एक ही है। आपका जीवन अत्यन्त पवित्र, उच्च और महान है—सभी के लिए अनुकरणीय है।

अन्त में पाठकों से निवेदन है कि यह पुस्तक पढ़ने के लिए ही नहीं किन्तु मनन करने और जीवन में उतारने के लिये समझें।

रघुनन्दप्रसाद
मन्त्री—'सत्यसन्देश-ग्रन्थमाला'

विषय सूची

पूर्वार्ध [म. ईसा का जीवन]

उत्तरार्द्ध [म. ईसा के उपदेश]

ईसाई धर्म

पूर्वार्ध

[म. ईसा का जीवन]

१ जन्म

धर्मसंस्था किसी एक महान व्यक्ति के जीवन की छाया है। उसके जीवन की प्रत्येक बात का असर उस संस्था में पाया जाता है। वह महात्मा बीज की तरह धर्म-संस्था का उत्पादक और माली की तरह उसका पोषक होता है। ईसाई धर्म महात्मा ईसा के जीवन की छाया है इसलिये ईसाई धर्म को समझने के लिये महात्मा ईसा के जीवन पर एक सरसरी निगाह डाल लेना ज़रूरी है।

हमारे सामने जो लाखों बालक धूल में लोट रहे हैं या चिथडों में लिपटे हुए रोरहे हैं उनमें से कोई युगान्तरकारी महात्मा भी हो सकता है पर यह बात दुनिया नहीं जानती। दुनिया के अधिकांश महात्मा इसी तरह पैदा हुए हैं। वे साधारण कुटुम्ब में पैदा हुए और अपने त्याग तप जनसेवा और ज्ञान के कारण महान बने। पर दुनियाने उन्हें महान रूप में देर से पहिचाना। आज लोग इस बात पर अचरज करते हैं कि लोगों ने ऐसी छोटी छोटी बातों के लिये ऐसे महात्माओं को परेशान

किया । क्या इतना बड़ा महात्मा इतना साधारण आदमी था ? लोगों का दिल नहीं चाहता कि इतने बड़े महात्माको शुरुमें भी ऐसे साधारण रूपमें देखा जाय । इसलिये वे उसके जीवन को अनेक कल्पित अतिशयों से भर देते हैं । इसीलिये हम कृष्ण, महावीर बुद्ध आदि महात्माओं के जन्म और जीवन के समय अनेक चित्रविचित्र और असंभव अतिशयों की कल्पना पढ़ते हैं । म. ईसा के विषय में भी भक्तोंने यही किया । फिर भी असली बात छिपी नहीं रहती । उसे माननेमें कोई बुराई भी नहीं है । महात्माओं का जन्म, और शुरुआत में उनका जीवन, साधारण था इस बात से महात्माओं की महत्ता घटती नहीं है बल्कि बढ़ती है । जन्म से अगर कोई महान था तो उसके महान कहलाने में उसका क्या पुरुषार्थ कहलाया ? साधारण होकर असाधारण बनने में महत्ता है । इसी दृष्टिसे महात्मा ईसा का विकास काफी असाधारण कहा जासकता है ।

ईसाकी माता मरियम गलील प्रान्त के नासरत गांव की रहनेवाली थी । यूसुफ नामक एक युवक से मरियम की सगाई हुई थी । पर जब यूसुफ को मालूम हुआ कि मरियम गर्भवती है तब उसने मरियम को त्यागना चाहा पर समझाने बुझाने से वह मानगया और उसने मरियम के साथ शादी करली ।

धर्मान्धता में डूबकर इस बातसे बहुतसे लोग म. ईसा की, ईसाइयों की, और ईसाई धर्म की निन्दा किया करते हैं । पर इससे न तो म. ईसाको कोई कलंक लगता है, न ईसाईयों को, न ईसाई धर्म को । आदमी का शरीर कैसे पैदा हुआ इस पर उसकी

महत्ता निर्भर नहीं है। मरियम तो एक सदाचारिणी बालिका थी, अगर परिस्थितिवश ऐसी कोई घटना हो भी गई तो भी यह कोई ऐसा बड़ा पाप नहीं था जिससे उसे तिरस्कृत किया जासके, पर अगर कोई नारी सचमुच दुराचारिणी हो तो भी उसकी सन्तान पर किसी तरह का दोषारोपण नहीं किया जासकता। वास्तवमें व्यभिचार पाप कहा जासकता है व्यभिचार से पैदा होना पाप नहीं कहा जासकता। कुमारी से पैदा होनेवाले कर्ण का नाम भारतवर्ष में मशहूर ही है। कर्ण एक महान दानी और असाधारण शूर व्यक्ति था। उसकी कानीनता (कन्या-पुत्र होने) से उसके गुणों को उसकी महत्ता को धक्का नहीं लगता। म. ईसा की जन्मकथा कैसी भी हो पर उससे उनकी महत्ता को धक्का नहीं लग सकता।

खैर, गर्भवती मरियम की शादी यूसुफ से होगई। उन्हीं दिनों यहूदियों के राजा कैसरने सब यहूदियों की मर्दुम-शुमारी करने की आज्ञा निकाली। पर इसके लिये उस के दूत गांव गांव में न घूमे किन्तु गांववालों को शहर में बुलाया। ऐसे विशालरूप में यह वहाँ पहिली मर्दुमशुमारी थी। इसके लिये यूसुफ अपनी गर्भवती पत्नी मरियम को लेकर यहूदिया प्रान्त के बैतलहम नगर को गया। बैतलहम में काफी भीड़ थी। यूसुफ को ठहरने के लिये किसी सराय में जगह न मिली। उसे खाली मैदान में ही ठहरना पड़ा। ऐसे ही कष्टके समय में मरियम को प्रसूतिवेदना हुई, बच्चा पैदा हुआ। बच्चे को रखने के लिये एक टोकनी भी उनके पास नहीं थी। बच्चे को एक

मामूली कपड़े में लपेट कर चलनी में रख दिया गया।

उस दिन यह कौन कह सकता था कि जिस बालक को आज ठहरने को जगह भी नहीं, वह एक दिन जगत् का ज्योतिर्धर होगा। उसके विशाल स्मारकों की सीढ़ियों पर बड़े बड़े सम्राटों के मुकुट रगड़े जायँगे और उसके पुजारियों के हाथ में सैकड़ों राजाओं की लगाम होगी।

खैर, आठ दिन पूरे गये। रिवाज के अनुसार उसके खतने का समय आया उस समय बच्चे का नाम ईसा रक्खा गया।

२ बाल्यावस्था

ईसा जन्मसे ही बुद्धिमान और तार्किक थे। उनने बारह वर्ष की उम्रमें ही येरुशलम में जाकर पंडितों से चर्चा की थी।

फसहके त्योहार पर चारों तरफ़से हज़ारों यहूदी येरुशलम आया करते थे। फसह यहूदियों का सबसे बड़ा त्योहार था। ईसाके माता पिता भी यात्राके लिये आते थे और उनके साथ ईसा भी। एक बार की बात है, जब ईसा की उम्र बारह वर्ष की थी, ईसा के माता पिता येरुशलम की यात्रा करके लौटे। चलते समय ईसा येरुशलम के मन्दिर में ही रह गये। लौटते समय यात्रि के झुंडके झुंड थे, ईसा के माता पिताने सोचा ईसा किसी झुंड में होगा। पर दूसरे पड़ाव पर पहुँचने पर जब ईसा का पता न लगा तब ईसा के माता पिता लौटे। फिर येरुशलम पहुंचे। उनने देखा कि बालक ईसा बड़े बड़े उपदेशकों के बीच बैठा वाद विवाद कर रहा है। वे चकित हुए। मरियम ने कहा—बेटा; तूने यह क्या किया ? हम लोग लौटे और तू यहीं रहगया। तेरा पिता

तुझे ढूढ़ते ढूढ़ते हैरान होगया।

ईसाने कहा—मुझे क्यों ढूढ़ते थे ? मैं पिता का ही तो काम कर रहा था।

ईसा का बोलने का ढंग कुछ ऐसा था कि साधारण लोग तो कभी कभी उनकी बात बिल-कुल न समझ पाते थे। दृष्टान्त और रूपकों में बात करना ईसाको बहुत पसन्द था। पिता से ईसा का मतलब परमपिता परमेश्वर से था।

मरियम ने ईसा की बात का मतलब तो न समझा पर इतना ज़रूर समझा कि मेरा लड़का साधारण आदमी नहीं है।

ईसा माता पिता के साथ नासरत आगये। फिर कभी इस तरह माता पिता को तंग नहीं किया।

उनदिनों योहन नाम का एक धार्मिक क्रान्तिकारी महापुरुष धर्म प्रचार करता था। उनदिनों धार्मिक सुधार का काम बहुत कठिन था। ऐसे लोगों को लोग और शासक मार डालते थे। धर्म के नाम पर लोगों में बड़ा जोश आजाता था, कहीं लोग नये धर्म के कट्टर भक्त बन जाते थे और कहीं कट्टर विरोधी बनजाते थे।

योहन समझता था कि जो काम मैं करना चाहता हूं वह पूरा न कर पाऊंगा, पर उसका काम पूरा करनेवाले के लिये रास्ता साफ़ करने का उसे पक्का विश्वास था। इसलिये वह कहा करता था कि मैं तो सिर्फ़ पानी से बपतिस्मा देता हूं पर मेरे बाद जो आयगा वह पवित्रात्मा (सत्य) और आग से बपतिस्मा देगा। इसी महान पुरुष योहन से बालक ईसाने बपतिस्मा (एक तरह की धर्मदीक्षा) लिया था।

ईसाकी पढ़ाई लिखाईका कोई विशेष प्रबन्ध नहीं होसका। पर जो दुनियाको पढ़ सकता है उसे किताबी शिक्षण की ज़रूरत नहीं होती। ईसा किताबों के द्वारा नहीं किन्तु विवेक और अनुभव से ईश्वर को धर्म को और दुनिया को पढ़ना चाहते थे।

३–प्रचार की तैयारी

योहन से बपतिस्मा लेकर ईसा के मनमें धर्म प्रचार का विशेष विचार आया। उनने इधर इधर लोगों में चर्चा की। म. ईसा की तार्किकता, हाज़िरजवाबी, अखंड निश्चय और आत्मगौरव का लोगों के दिलपर बड़ा असर पड़ता था।

फिर भी ईसाने यह विचार किया कि कुछ दिन तक पूरा विचार करना चाहिये और विशेष योग्य बनने के लिये तपस्या भी करना चाहिये। इसके लिये वे बस्तीसे बाहर चालीस दिन रहे। खूब आत्म–चिन्तन किया, अपने मतपर खूब तर्क वितर्क किया, खाने पीने की बिलकुल पर्वाह न की। इस अवस्था में ईसा में खूब आत्म–विश्वास बढ़ा। उसी समय उनने अनुभव किया कि वास्तव में मैंने सत्य पाया है मैं दुनिया को सत्य-सन्देश देसकता हूँ, अब मेरा पुनर्जन्म हुआ है।

४–उस समय की हालत

ईसाई मज़हब के संस्थापक महात्मा ईसा इस्राईल अर्थात् यहूदी जाति के थे। यहूदी लोग हज़रत मूसा के धर्म को मानने वाले थे। पर तीन कारण ऐसे थे जिससे ईसा सरीखे एक नये महात्मा की ज़रूरत थी। ये तीन कारण या इन्हीं में से एक या दो कारण किसी तीर्थंकर पैग़म्बर अवतार आदि युगान्तरकारी महात्मा के प्रगट होने

के लिये ज़रूरी होते हैं।

१—पुराने धर्म का विकास करने के लिये।

२—उस धर्म में आये हुए विकारों या भ्रमों को दूर करने के लिये।

३—देशकाल के अनुसार नियमों में परिवर्तन करने के लिये।

१—म. ईसा के सामने ये तीनों काम थे। हजरत मूसा के धर्म में विकास की काफ़ी गुंजाइश थी। उनके नैतिक नियमों को अधिक उदार बनाना ज़रूरी था। हज़रत मूसा के समय में इस्राईल लोग मिश्र में गुलामों की तरह रहते थे। मूसाने उनका संगठन किया, मिश्र से निकालकर उन्हें दूसरे देश में बसाया, रास्ते में आनेवाले संकटों में उन्हें धीरज बँधाया, दूसरे देशों को जीता, और यथाशक्य उन्हें नैतिक उपदेश दिया। इससे मालूम होता है कि ह. मूसा के सामने उनकी जातीय परिस्थिति ऐसी थी कि वे मानवहित को मुख्यता नहीं देसकते थे। उनके सामने उनकी जातिका काम ही इतना विशाल था कि उसे पूरा करने में ही उनका जीवन पूरा हो गया। पर जब इस्राइलों का स्वतंत्र राज्य होगया वे हर तरह से समुन्नत होगये तब यह ज़रूरी था कि ह. मूसा के धर्म में कुछ विशालता और उदारता लाई जाय। यह काम म. ईसाने किया। उनने धर्म का रूप अधिक से अधिक कोमल और उदार बनाया। म. ईसा को बार बार यह कहना पड़ता था कि "पहिले तुम से यह कहा गया था पर मैं यह कहता हूं।" हज़रत मूसा का धर्म जातीय धर्म था। यद्यपि उसमें भी मानव धर्म की बहुतसी बातें थीं, पर हज़रत मूसा के धर्म में मानव धर्म की मुख्यता न थी।

२–दूसरा कारण भी हजरत ईसाके प्रगट होने के लिये मौजूद था। ह. मूसा का धर्म जैसा भी था उसमें काफ़ी विकार आगये थे। पंडितों ने अपनी नासमझीसे काफ़ी भ्रम पैदा कर लिये थे, पुजारियों ने धर्म को अपने स्वार्थ का अड्डा बना लिया था। इस बारे में म. ईसाको काफ़ी सुधार करना था। पुजारियों का भंडा–फोड़ करना था, नियमों का रहस्य समझाना था, ऊँच नीच का भेद भाव दूर करना था ढोंगों को निर्मूल करना था।

३–कुछ नियम ऐसे होते हैं कि एक परिस्थिति के लिये अच्छे होते हैं दूसरी परिस्थिति के लिये अच्छे नहीं होते। लोग उस बदली हुई परिस्थिति का विचार नहीं करते और रूढ़िके रूप में उनका पालन करने लगते हैं। किसी ज़माने में परिस्थिति वश उपवास वगैरह तपस्याओं पर ज़ोर देना पड़ता है पर पीछे ये तपस्याएँ अनावश्यक हो जाती हैं। यहूदियों में भी ऐसे ही बाह्याचार फैले हुए थे जिनका जीवन पर कोई असर नहीं होता था सिर्फ़ किसी ज़माने में आवश्यक होने के कारण रूढ़िके रूप में चले आरहे थे। इसके लिये भी म. ईसा को बहुत काम करना था। इस प्रकार उस समय की हालत ईसा सरीखे महात्मा की ज़रूरत बतलाती थी।

५ अपने नगर में

महात्मा ईसा ने जब स्वतंत्र रूपमें उपदेश देना शुरु किया तब इनकी उम्र तीस वर्षकी थी। इसके पहिले चालीस दिन वे जंगल में रह चुके थे। उनने गम्भीर विचार किया था। मानसिक संकल्प विकल्पों पर विजय पाई थी और दृढ़ निश्चय के साथ वे उपदेश के लिये–जन सेवा के लिये–निकले थे।

घूमते घूमते वे अपने ही प्रान्त गलील में पहुँचे। प्रान्त में भी अपने नगर नासरत में पहुँचे। वहाँ उनने शास्त्रवाचन किया उपदेश दिया। पर अपने गांव में किसी की कद्र नहीं होती। इसलिये गांववाले कहने लगे-अरे यह तो यूसुफ बढ़ई का लड़का है यह उपदेशक कब से होगया? इसके भाई बहिन तो हमारे यहीं आया करते हैं। बाहरे उपदेशक!

म. ईसाने कहा—मैं सच कहता हूं कोई नबी अपने देश में मान सन्मान नहीं पाता। अपने देश और अपने घर को छोड़ उसका कहीं अपमान नहीं होता। म. ईसाने और भी कुछ ऐसी बातें कहीं जो सच्ची थीं पर लोगों को उनमें भी यीशुका अहंकार दिखाई दिया इसलिये वे चिढ़गये। यहां तक कि उनने यीशुको नगर से बाहर निकाल दिया। इतना ही नहीं, लोगों ने तो यहाँ तक विचार किया कि इस पहाड़ की चोटीपर से नीचे ढकेल दिया जाय। इसके लिये वे यीशु को पकड़कर ले भी गये पर म. यीशु किसी तरह उन लोगों के फन्दे में से छूट कर निकल गये।

साधारणतः दुनिया मनुष्य के भौतिक विकास को देख पाती है और उसीसे वह किसी के महत्व को समझ पाती है चमड़े की आँखों से और ज्यादा आशा नहीं की जा सकती। अगर किसीने किसी के आध्यात्मिक विकास को समझा भी तो वह अपरिचितों में से होता है। परिचित लोग या रिश्तेदार लोग शायद ही किसी के भीतरी महत्व को समझ पाते हैं। अपरिचित व्यक्ति की छोटी से

छोटी बातों में वे जो महत्ता देख पाते हैं परिचित की उससे चौगुनी बातों में चौथाई महत्ता भी वे नहीं देख पाते। अपरिचित में जहाँ उन्हें भक्ति पैदा होगी परिचित में वहाँ उन्हें ईर्ष्या होगी। इसीलिये म. यीशु को कहना पड़ा और सच कहना पड़ा कि कोई नबी अपने देश में सन्मान नहीं पाता।

६ प्रचार क्षेत्र

अपने नगर में इस प्रकार अपमान होने पर म. यीशुने गलील के अन्य नगरों में प्रचार किया और प्रचार के लिये शिष्य भी बनाये। प्रचार के लिये वे नगरसभाओं में जाते थे कभी कभी वे पहाड़ पर चले जाते थे और लोगों की भीड़ भी इकट्ठी हो जाती थी। घूमते घूमते वे कफरनहूम नगर में पहुँचे। वहाँ से नाव में बैठकर झील पार करके गदरेनियों के प्रान्त में पहुँचे। पर वहाँ के लोगों ने हाथ जोड़ कर कहा—आप इसप्रान्त से चले जायँ, क्योंकि यीशुके पहुँचने पर सूअरों का एक झुंड पानी में डूबकर मरगया था।

काफी प्रचार और लोक सेवा करने पर भी म. यीशु को कोई सफलता नहीं मिली। उन की सेवा का लाभ उठाने के लिये बीमार उन के पास आते थे एक मस्त फकीर समझकर भी लोग कुतूहल वश उन के पीछे पीछे फिरते थे उन की बातों से लोग प्रभावित भी होते थे पर उन के मिशन के ध्येय को समझनेवाले, उसे जीवन में उतारने वाले लोग नहीं मिलते थे। प्रचार की यह निष्फलता देखकर म. यीशु को एक बार बड़ा खेद हुआ। अपने नगर में तो उन का काफी अपमान हो चुका था पर कफरनहूम

सुराजिन बैतसैदा आदि नगरों में भी उन्हें सफलता नहीं मिली थी। इसलिये उनने सोचा कि शायद सूर और सैदा की तरफ प्रचार करने में कुछ सफलता मिलेगी।

म. यीशु को प्रचार में यह भी अनुभव हुआ कि जो लोग पढ़े लिखे हैं वे केवल बकवाद करते हैं पर जो बिना पढ़े हैं वे कुछ अधिक समझते हैं। बात यह है कि ज्ञान एक महान रस है जिसे वह पचता है उस में विवेक विनय जिज्ञासा और श्रद्धा पैदा होती है जिससे मनुष्य अपना और जगत का कल्याण करता है जिसे वह नहीं पचता उस में अभिमान अविनय वृथासन्तोष और अश्रद्धा पैदा करता है। इन बीमारियों से मनुष्य अपना और जगत का अकल्याण करता है। उसके लिये ज्ञान पशु के ऊपर लादे हुए अनाज की तरह बोझ बनजात है।

म. ईसा इस तरह से असफलता से खिन्न थे ही इतने में उनके पास समाचार आया कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर काट लिया गया। यूहन्ना वही महात्मा था जिससे म. ईसाने बपतिस्मा लिया था। वह भी अनीति और अत्या-चारों का विरोध करता था और शासक वर्ग भी पाप में खूब सना हुआ था इसलिये हेरोदेसने उसे जेल में डाल दिया था और अपनी रखेल स्त्री के कहने से उसने म. यूहन्ना का सिर कटवा लिया था।

यह समाचार काफी दुःखद और निराशाजनक था। लोग यों ही सचाई को नहीं समझते थे। उनमें इतना साहस भी नहीं था कि अत्याचार के विरोध में किसी का साथ दे सकें।

ऐसे बुजदिल मूढ़ स्वार्थी ईर्ष्यालु लोगों में एक तो प्रचार ही कठिन था फिर प्रचार करने में इस प्रकार प्राणों से हाथ धोना पड़ता था इससे म. ईसा को बहुत खेद हुआ और वे कुछ दिनों के लिये किसी सुनसान जगह में चले गये।

पर जो महात्मा जगत के उद्धार के लिये आया था वह इस प्रकार एकान्त में कबतक बैठ सकता था। उसे निकलना पड़ा और फिर प्रचार में लगजाना पड़ा। फिर पीछे पीछे भीड़ फिरने लगी। अब वे गन्नेसरत देशमें पहुँचे।

यद्यपि इस समय म. ईसा के सच्चे अनुयायी कहीं नहीं थे पर क्षोभ काफी जगह फैला गया था। यरुशलम तक यह बात फैलगई थी। यरुशलम से कुछ पंडित म. ईसाके पास आये चर्चा करके उनने महात्मा ईसाका मुँह बन्द करना चाहा पर म. ईसा ने ऐसे अच्छे उत्तर दिये कि खुद उन पंडितों की बोलती बन्द होगई।

यहाँ से निकलकर म. ईसा सूर और सैदा के देशों की तरफ गये। वहाँ भी उनने यहूदियों में प्रचार किया। इन का प्रचार क्षेत्र मुख्यता से यहूदी कौम था। यहाँ तक कि जब एक कनानी स्त्री इन के पास आई तो इन ने सेवा करने तक से इनकार कर दिया। पर जब उस की श्रद्धा अटल देखी तब उसकी बेटी को इन ने नीरोग बनाया। पर शुरु शुरु की यह संकुचितता पीछे निकलगई। और उन ने अपने शिष्यों को सब जातियों में प्रचार करने की आज्ञा दी।

सूर सैदा से लौटकर दिकपुलिस देश में घूमते हुए ये फिर

गलील की झील के किनारे आये। यहाँ प्रचार कर फिर नावपर बैठकर मगदन के देश में गये । वहाँ प्रचारकर कैसरिया फिलिप्की देश में गये वहाँ प्रचार किया । वहाँ से कुछ दिन पहाड़ पर रहे । वहां से फिर गलील प्रान्त में आये ।

इस समय इनके चारों तरफ संकट मड़राने लगा था । यहुदी लोग इन्हें मारडालने की फिराक में थे इसलिये ये यहूदिया की तरफ न जारहे थे । यहाँ तक कि इनके भाईबन्ध रिश्तेदार आदि भी व्यंग किया करते थे। कहते थे—इस तरह छिपकर काम करने से प्रचार नहीं होता तुम प्रसिद्ध भी होना चाहते हो और छिपे भी रहना चाहते हो ये दोनों काम एक साथ कैसे होंगे ? बात यह है कि इनके भाई वगैरह इनपर विश्वास नहीं करते थे बल्कि ईर्ष्या रखते थे इसलिये मौके बेमौके ताना मारा करते थे ।

म. ईसा बड़ी नम्रता सरलता और प्रेम से उत्तर देते थे कि-मेरा समय अब तक नहीं आया है पर तुम्हारा समय सदा बना रहता है । जगत तुमसे वैर नहीं करता पर मुझसे करता है क्यों कि मैं उसके बुरे कामों की बुराइ बताता हूं । इसलिये तुम जाओ । जब मेरा समय पूरा हो जायगा तब मैं भी जाऊंगा ।

म. ईसा को यह विश्वास था और ठीक था कि यरुशलम में जाना मौत के मुँह में जाना है पर यरुशलम में गये बिना प्रचार की पूर्णाहुति नहीं हो सकती थी । इसलिये वे जितना बनसके उतना बाहर प्रचार करके मरने का निश्चय कर अंतिम समय में यरुशलम जाना चाहते थे । वे मरने से डरते न थे पर अधिक से अधिक

जगत् सेवा हो इसके लिये अधिक से अधिक जिन्दे रहना चाहते थे मौत से बचने की पूरी पूरी कोशिश करना और जब आवश्यक हो तब निर्भयता से मौत के मुँह में चले जाना यही उनकी नीति थी।

उन ने कितने वर्ष प्रचार किया और किस उम्र में उनका देहान्त हुआ इसका ठीक उल्लेख नहीं मिलता। पर इतना उल्लेख तो है ही कि उन ने तीस वर्ष की उम्र में प्रचार शुरु किया था। और जब वे यरुशलम गये थे तब चर्चा करते समय यहूदियों ने कहा था—"अभी तू पचास वर्ष का भी नहीं है फिर ऐसी बातें क्यों करता है?" इस से मालूम होता है कि ईसा पचास के पहिले करीब पैंतालीस वर्ष की उम्र में मारे गये होंगे। इस प्रकार उन ने करीब पन्द्रह वर्ष प्रचार किया होगा।

संसारके मुख्य मुख्य धर्म संस्थापकों को धर्म प्रचार का जितना समय मिला उससे बहुत कम समय म. ईसाको मिला। और उनका छोटी उम्र में ही देहान्त हो गया इसलिये अन्य धर्म संस्थाओं की तरह उन्हें अपनी धर्म संस्थाको व्यवस्थित करने और उसे सर्वांग पूर्ण बनाने का अवसर न मिला। पर उसके बीज अच्छी तरह जम गये थे। और उनके अलौकिक प्राणोत्सर्ग ने सारी कमी पूरी करदी थी।

जीवन में इतनी कम सफलता मिली हो और पीछे इतना अधिक प्रचार हुआ हो इसका असाधारण उदाहरण ईसाई मिशन की सफलता है।

७—बारह शिष्य

म. ईसाके बारह शिष्य थे जो जनसाधारण में से उनने बनालिये थे। बहुतसे तो साधारण मछुए थे। इन में एक शिष्य यहूदा कमज़ोर और स्वार्थी निकला। इसने तीस रुपये की लाँच लेकर म. ईसाको पकड़वा दिया। इस तरह के महान सन्तों के जीवन में हम एक न एक ऐसा कुशिष्य देखते हैं जो अपनी स्वार्थपरता से इन महापुरुषों के जीवन में एक न एक अड़ंगा डालता है। जैन धर्म के संस्थापक महात्मा महावीर का शिष्य जमालि म. महावीर का विद्रोही हो गया। बौद्ध धर्म के संस्थापक म० बुद्ध का शिष्य देवदत्त म० बुद्ध का विद्रोही होगया. उसने म० बुद्ध के प्राण लेने तक का प्रयत्न किया। म० ईसा का व्यक्तित्व भी म० महावीर और म० बुद्ध से कम नहीं था मानों इसीलिये उन्हें भी ऐसा विश्वासघातक शिष्य मिला। खैर, म० ईसा के बारह शिष्य ये हैं।

१ .... शमौन। इसे पतरस भी कहते हैं।

२ .... अन्द्रियास। यह शमौन का भाई था। ये दोनों भाई मछुए थे।

३ .... याकूब। जबदी मछुए का लड़का।

४ .... यूहन्ना। याकूब का भाई।

५ .... फिलिप्पुस।

६ .... बरतुल्मै।

७ .... तोमा।

८ .... मत्ती। महसूल लेनेवाला।

९ .... याकूब [हलफई का बेटा]
१०.... तद्दै ।
११....शमौन (कनानी) इसका दूसरा नाम जेलोतेस था ।
१२... यहूदा इसकरियोती (इसीने म. ईसा को पकड़वाया था) ।

म. ईसाने इन बारह शिष्यों को प्रचार को जाते समय जो उपदेश दिया था उस से म. ईसा की साधु संस्था और उस समय के प्रचार की कठिनाइयों और ईसाई धर्म के उद्देश्य का काफ़ी पता लगता है । अपने शिष्यों को दी हुई उन की आज्ञाओं का कुछ भाग यह है ।

" तुमने मुफ्त में पाया है मुफ्त में दो । अपने पास सोना न रखना चांदी न रखना तांबा न रखना । रास्ते के लिये झोली भी मत रक्खो, न दो कुरते रक्खो (एक कुर्ता काफी है) न जूते लो न लाठी लो क्यों कि मज़दूर को अपना भोजन मिलना चाहिये "

" देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की तरह भेड़ियों में भेजता हूं इस लिये तुम सर्प की तरह चतुर और कबूतर की तरह भोले बनो । लेकिन लोगों से चोकन्ने रहो क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सोंपेंगे और अपनी पंचायतों में कोड़े मारेंगे । तुम मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर और अन्य जातियों पर गवाह होने के लिये पहुँचाए जाओगे । जब वे तुम्हें सोंपें तब यह चिन्ता न करना कि वहाँ किस तरह क्या कहोगे ? क्योंकि जो कुछ तुम्हें कहना होगा वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जायगा । क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो पर तुम्हारे पिता का आत्मा (परम पिता परमेश्वर)

तुममें बोलने वाला है । भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिये सौंपेंगे और लड़के वाले माता पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे । मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से वैर करेंगे पर जो अन्त तक धीरज रक्खे रहेगा उसी का उद्धार होगा । जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ तब दूसरे में भाग जाना । मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुम इस्राइल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आजायगा । ”

“ जो शरीर का घात करते हैं पर आत्मा का घात नहीं कर सकते उन से न डरो, पर उसीसे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों का नाश कर सकता है ”

“ यह न समझो कि मैं पृथ्वीपर मिलाप कराने आया हूं मैं मिलाप करवाने नहीं पर तलवार चलवाने आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं । मनुष्य के वैरी उसके घर ही के लोग होंगे। जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं । और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं । जो अपना प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा और जो मेरे कारण अपने प्राण खोता है वह उसे बचाएगा । ”

किस निष्परिग्रहता, साहस धैर्य और कठोरता के साथ म० ईसा को और उनके शिष्यों को काम करना पड़ा इसका पता म० ईसाके इन तेजस्वी शब्दों से लगता है ।

८–संस्मरण

म० ईसा सत्यका प्रचार करते थे, रूढ़ियों का खण्डन करते थे नीति का माध्यम ऊँचा बनाते थे, दंभियों और स्वार्थियोंका विरोध करते थे, प्रेम और क्षमा का पाठ पढ़ाते थे, बीमारों और दुःखियों की सेवा करते थे। मिर्गी हिस्टीरिया आदि बहुत से रोग जिन्हें आज रोग समझा जाता है उस ज़माने में वहाँ के लोग शैतान की लीला आदि समझते थे। म० ईसा मनोवैज्ञानिक तरीक़े से इनकी चिकित्सा करते थे। म० ईसा का मनोबल इतना तेज़ था कि अधिकांश रोगी उनकी मानस चिकित्सा से नीरोग हो जाते थे।

म० ईसा के जीवन की महत्ता, उनका धर्म, नैतिकता सेवकता आदि समझने के लिए उनके जीवन की कुछ घटनाएँ देना ज़रूरी है। इन से समझा जासकेगा कि म० ईसा और उनका मज़हब क्या था।

१–एकबार एक विद्वानने बड़ी भक्ति के साथ कहा–प्रभु, तू जिस जगह रहेगा मैं भी तेरे पीछे पीछे वहीं रहूंगा।

म० ईसाने उत्तर दिया–देख, लोमड़ियों के भी भट होते हैं पक्षियों के भी बसेरे हैं पर मनुष्य के पुत्रको (मुझे) सिर रखने को भी जगह नहीं, तू मेरे साथ कैसे रहेगा?

सचमुच सच्चे जनसेवकों की ऐसी ही दुर्दशा होती है, विरले ही उनका साथ दे पाते हैं।

२–एकबार एक चेलेने कहा–प्रभु मेरा बाप मरगया है मैं उसे गाड़आऊं?

म० ईसाने उत्तर दिया—मुर्दों को मुर्दे गाड़ने दे तू मेरे साथ चल ।

३—एकबार म० ईसा भोजन कर रहे थे । उनके आसपास नीची कौम के और भी बहुतसे पापी या नीतिभ्रष्ट भी थे । यह देखकर विरोधियों ने म० ईसाके चेले से कहा—तेरा गुरु तो ऐसे नीच और पापियों के साथ रहता है । म० ईसाने यह बात सुनली और तुरंत कहा—

वैद्य नीरोगों के लिए नहीं आता बीमारों के लिए आता है । मैं धार्मियों को नहीं, पापियों को बुलाने आया हूं ।

४—महात्मा एकबार एक सभा में पहुँचे । वहाँ एक आदमी के हाथमें दर्द था । ये उसकी चिकित्सा करने लगे । विरोधियोंने आक्षेप किया कि क्या विश्राम के दिन किसी की चिकित्सा करना उचित है ?

महात्मा ने कहा—ऐसा कौन है जिसके एकही भेड़ हो और वह विश्राम के दिन कुएमें गिरजाय तो वह उसे न निकाले । जानते हो मनुष्य की क़ीमत भेड़से कितनी ज्यादा है ? आक्षेपक चुप रहगये ।

५—एकबार म० ईसा भीड़ में बातें कर रहे थे । किसी ने कहा—तुम्हारे भाई और माता बाहर हैं और तुमसे बात करना चाहते हैं । निष्पृह ईसा ने कहा—

"कौन हैं मेरे भाई और कौन है मेरी माता । (भीड़ की तरफ़ हाथ करके) देखो मेरी माता और मेरे भाई ये हैं क्योंकि जो

कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई बहिन और माता है ।"

६—एकबार म० ईसा के शिष्योंने पूछा—स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है ? म०ईसाने एक बालक खड़ा कर दिया और कहा—जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा ।

७—एकबार एक आदमीने म. ईसाको 'उत्तमगुरु' कहकर संबोधित किया । म० ईसाने तुरंत टोका । तू मुझे उत्तम क्यों कहता है ! परमेश्वर के सिवाय और कोई उत्तम नहीं ।

८—एक बार म. ईसा का उपदेश सुनकर एक स्त्री ने कहा-धन्य वह गर्भ जिस में तू रहा और धन्य वे स्तन जो तूने चूसे ।

म. ईसाने कहा—हां, पर उससे अधिक धन्य वे हैं जो परमेश्वर का बचन सुनते और मानते हैं ।

९—नीकुदेमुस एक बड़ा यहूदी था । उसने एक बार म. ईसा की तारीफ़ की और परमेश्वर के राज्य का ज़िक्र किया । म. ईसा ने कहा—

जब तक मनुष्य दूसरी बार पैदा न हो तब तक परमेश्वर का राज्य नहीं देखसकता ।

नीकुदेमुस ने कहा—मनुष्य एक बार पैदा होकर दूसरी बार कैसे पैदा हो सकता है ?

म. ईसाने कहा—पहिले बार शरीर पैदा हुआ है दूसरी बार आत्मा को पैदा होना है । शरीर से शरीर पैदा होता है और आत्मा

से आत्मा।

१०– एक बार कुछ यहूदी शास्त्री ईसा की दयालुता का भंडाफोड़ करने की ग़रज़ से एक स्त्री को लाये जो व्यभिचार के दोष में पकड़ी गई थी।

यहूदी नियम के अनुसार ऐसी स्त्रीको पत्थर मार मार कर मार डाला जाता था। शास्त्री चाहते थे कि ईसा कहदे कि इसे न मारो जिससे ईसा पर शास्त्राज्ञा के विरोध का दोष लगाया जासके।

जब उनने पूछा कि तुम इस स्त्री को क्या दंड देते हो, ईसा सिर झुकाये ज़मीन पर उँगली से लकीरें बनाते रहे। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन ने शास्त्रियों से पूछा--इस बारे में तुम्हारे शास्त्र क्या कहते हैं?

शास्त्रियों ने कहा--ऐसी स्त्री को संगसार करना चाहिये।

म० ईसाने कहा--तो मैं भी यही कहता हूं। पर एक शर्त है।

शास्त्री--वह क्या?

म० ईसा–पहिला पत्थर वही मारे जो निष्पाप हो क्योंकि निष्पाप ही पापी को दंड दे सकता है।

इतना कहकर ईसाने फिर सिर झुका लिया। संगसारी का भयंकर दृश्य उन की आँखे देखने को तैयार न थीं।

थोड़ी देर तक कोई आवाज़ नहीं आई, तब म० ईसाने अपना सिर ऊपरको उठाया। पर उनने देखा कि सामने कोई

नहीं है, सिर्फ़ वही स्त्री खड़ी है। उनने उससे कहा—बाई, वे लोग कहाँ गये ? क्या उनमें से किसीने तुझे दंड नहीं दिया ?

स्त्री—नहीं, प्रभु किसीने भी दंड नहीं दिया।

म० ईसा—तो जा, मै भी दंड नहीं देता। अब पाप न करना।

११—एक बार म० ईसाने अपने व्याख्यान के अन्तमें कहा अगर तुम सत्य को मानोगे तो सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

लोगोंने कहा—हम तो स्वतंत्र हैं हम किसी के गुलाम नहीं हैं। म० ईसाने कहा—जो पाप करता है वह पाप का गुलाम है।

९—यरुशलम में

यहूदियों का सबसे बड़ा और मुख्य नगर यरुशलम था और वही सबसे बड़ा तीर्थस्थान था। म० ईसा कई बार इस तीर्थ की यात्रा करचुके थे। किसीके मत से प्रचार के लिए भी एकाध बार वे यरुशलम का चक्कर लगा चुके थे लेकिन बाद में वे यरुशलम से बचते रहे क्योंकि यहाँ उनकी जान के ग्राहक बहुत थे। पहिले भी अनेक नबी पैगम्बर तथा सुधारक सन्तों की हत्या यरुशलम में की जा चुकी थी।

इतना होनेपर भी म० ईसाने यरुशलम जाने की तैयारी की। इस समय सब से ज्यादा सुधार की जरूरत वहीं थी। पुजारियों का जाल वहीं बिछा था।

यरुशलम के पास जेतून पहाड़ पर ये ठहरे। ये दिन में प्रचार करते थे और रात में पहाड़पर एकान्त में ठहरते थे। यरुशलम

में सब तरह के लोगों की बड़ी भीड़ रहा करती थी। कुछ इनके पक्के नहीं तो साधारण भक्त भी थे। दिनमें पकड़े जाने का डर कम था क्योंकि भीड़ में सभी तरह के लोग होनेसे विद्रोह हो जाने का डर था। इसलिये म० ईसाने यही नीति रक्खी कि सच बोलने में डरना नहीं, किन्तु मौत को जितना टालते बने टालना और मरने का अवसर आही जाय जो पीछे क़दम न उठाना। इस तरह विवेक और वीरता का समन्वय करके वे यरुशलम आये।

जब वे यरुशलम के विख्यात मन्दिर में पहुँचे तो वहाँ खूब दूकानदारी लगी थी। इनने वहाँ के पंडे पुजारियों को फटकार कर कहा—तुम लोग यह क्या करते हो? यह प्रार्थना का घर है डाकुओंकी खोह नहीं। इस प्रकार उन्हें फटकार कर तथा कुछ रोगियों की सेवाकर वे नगर के बाहर बैतनिय्याह चलेगये। उनने रात वहीं बिताई।

दूसरे दिन ये फिर मन्दिर में आये। कलकी चर्चा से सनसनी थी ही। आते ही महायाजकों और मुखियों ने टोका कि तुम किस अधिकार से यह सब करते हो। पर म० ईसाने उन्हें बातों में उलझाकर निरुत्तर कर दिया और उन्हें भी फटकारा और कहा—कि ईश्वर के घर में वेश्याओंको पहिले जगह मिलेगी पर तुम्हें नहीं।

कुछ दिन तक मन्दिर में इसी तरह शास्त्रियों का म. ईसा से शास्त्रार्थ हुआ करता था और म. ईसा के उत्तरों से उन की बोलती बन्द हो जाया करती थी। म० ईसा गुरुडम का भंडा-फोड़ किया करते थे, दंभ और अनीति की निन्दा किया करते थे। लोगों से कहते

थे—इन शास्त्रियों से सावधान रहो जो लम्बे लम्बे कपड़े पहिन कर घूमना चाहते हैं, नमस्कारों के भूखे हैं, जो विधवाओं के घर हड़प जाते हैं और दिखाने के लिये बहुत प्रार्थना करते हैं।

दम्भ और अन्ध विश्वास से जिनकी रोटी चलती थी और इसीके बल पर जो प्रतिष्ठा के शिखर पर बैठे थे वे म० ईसा के कट्टर शत्रु हो गये। और उनने भोली जनता को धर्म डूबने का डर दिखाकर भड़काना शुरु किया। म. ईसा का संकट और बढ़ गया फिर भी किसी तरह म. ईसा अपना प्रचार करते रहे।

एक दिन जबकि यरुशलम में स्थापन पर्व था ठंड के दिन थे, म० ईसा मन्दिर में सुलेमान के ओसारे में टहल रहे थे इसी समय कुछ यहूदियों ने उन्हें घेर लिया और कहा कि—क्या तुम मसीह

म० ईसा ने कहा--कहतो दिया है। यह सुनकर वे सब पत्थरों से मार डाल ने को तैयार हो गये। म० ईसा ने कहा—मैंने तुम्हारी जो सेवा की, भले काम किये, क्या उन का बदला चुका रहे हो।

उन ने कहा--भले कामों के लिये हम तुम्हें पत्थर नहीं मारते पर तुम अपने को ईश्वर कहते हो इसलिये पत्थर मारते हैं।

म. ईसाने कहा--क्या शास्त्रों में नहीं लिखा है कि वे ईश्वर हैं जिनके पास परमेश्वर का बचन पहुँचा फिर मैं तो परम पिता का सन्देश वाहक हूँ।

यह सुनकर लोगों ने उन्हें मारने के लिये पकड़ना चाहा पर म० ईसा पकड़ाई न दिये और उन के हाथ से निकल गये।

वहाँ से निकलकर मरदन के उसपार उस जगह चले गये जहाँ म० यूहन्ना बपतिस्मा देने वा ले रहा करते थे।

वहाँ जाकर उनने कुछ मौतके मुँह में पड़े हुए लोगों को बचाया। ये समाचार भी यरुशलम पहुँचे तब पुजारियोंने तथा और लोगोंने भी सलाह की कि अगर ईसा जीता रहा तो हमारी प्रतिष्ठा और रोटी सब छिन जायगी। इसलिये जिस तरह भी बने ईसा को मार डालना चाहिये।

ये समाचार म. ईसा के पास पहुँचे। इसलिये मामला शान्त होने के लिये कुछ दिनों के लिये किनारा काट लिया। यहूदियों में प्रगट में प्रचार करना बन्द कर दिया और जंगल के किनोर इफ्राईम नामके नगर को चलेगये और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगे।

पर अब फ़सह का पर्व निकट आगया था। यरुशलममें चारों तरफ़से हजारों यात्री इकट्ठे होने लगे थे। बहुतसे म. ईसा को ढूँढने लगे थे। इस पर्व का उपयोग प्रचार के लिये करना ज़रुरी था। और इसप्रकार मौत से डरकर प्रचार कब तक रोका जासकता था। इसलिये म. ईसाने मरने की पूरी तैयारी करके यरुशलमकी तरफ़ प्रस्थान किया। पर्व के छः दिन पहिले वे यरुशलम आगये।

दिनमें वे प्रचार करते थे और रातमें नगरके बाहर चले आतेथे। और रात का निवास स्थानभी वे बदलते रहते थे। दिनमें पकड़ना इसलिये कठिन था कि इससे भीड़ में होहल्ला मचता, इसलिये रातमें ही पकड़ना ज़रुरी था पर किस रातको कहाँ रहना है यह बात उनके शिष्यों को ही मालूम रहतीथी; इसलिये यहूदी

अधिकारी और पुजारी म. ईसाको रातमें उनके निवास स्थान में ही पकड़ना चाहते थे। म. ईसाको इस बात का पता था। पर अब वे यरुशलम का प्रचार रोकना नहीं चाहते थे। न मरना चाहते थे न मौतसे डरना चाहते थे। उनका यह भी विचार था कि बिना जीवन दिये सत्य का प्रचार न होगा उसका महत्व न बढ़ेगा। गिरफ्तार होने के पहिले उनने अपने शिष्यों से इस विषयमें बहुत कुछ कहा था। निम्न लिखित वाक्य ध्यान देने योग्य हैं:—

"मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयगा पर यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।

मुझे तुमसे और भी बहुतसी बातें कहनी हैं पर अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। पर जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आयगा तो तुम्हें सारे सत्यका मार्ग बतायगा।"

इस तरह के आत्मबलिदान की सार्थकता का उन्हें अखंड और बुद्धि-संगत विश्वास था इसीलिये उन ने अपने शिष्यों से कहा था —

"मैं तुमसे सच कहता हूं जब तक गेहूं का दाना भूमिमें पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है पर जब मर जाता है तब बहुत फल लाता है। जो अपने प्राणों का मोह करता है वह उन्हें खोदेता है और जो इस जगतमें अपने प्राणोंका मोह नहीं करता वह अनन्त जीवन के लिये उनकी रक्षा करता है"

मौत तो सभी को आती है और कभी कभी असमय में भी

मौत आती है पर मानव-समाज के लिये ऐसी मौतें कलंक के समान हैं जिनमें मनुष्य पाप को परमेश्वर की सेवा समझता है। स्वार्थी दंभी और प्रतिष्ठा--लोलुप पंडित म. ईसा को अपने स्वार्थ के लिये मरवाना चाहते थे और इसप्रकार की मौत को धर्म समझते थे। पर दुर्भाग्य है कि हरयुगमें ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। म. ईसाने इसी बात की चेतावनी अपने शिष्यों को दी थी।

"वह समय आता है कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ।"

पर दुनिया का यह दुर्भाग्य भी अन्तमें किस तरह सौभाग्य बनजायगा इसकी अमर आशा उनके दिलमें थी। इस बात को एक दृष्टान्त द्वारा उनने बड़े अच्छे ढंगसे प्रगट भी किया है।

"जब स्त्री जनने लगती है तब उसको शोक होता है क्योंकि उसकी दुःखकी घड़ी आपहुँची पर जब बालक का जन्म होजाता है, इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य पैदा हुआ, उस दुःख का स्मरण तक नहीं करती"।

सचमुच मनुष्यकी प्रसव-पीड़ा के समान ही मनुष्यता की प्रसव--पीड़ा है।

मौत आए तो उसका स्वागत करने का दृढनिश्चय उनमें था पर एक तरह की बेचैनी भी थी। और यह स्वाभाविक बात है। इसके लिये वे कोई समझौता करने को तैयार नहीं थे।

जिस रात को वे पकड़े जानेवाले थे उस रात में बड़े बेचैन रहे थे। उस रात वे किद्रोन के नाले के पार गतसमने नामकी जगह में चले गये थे। उस दिन उनका चित्त बहुत उदास और व्याकुल था। उनने अपने शिष्यों से कहदिया था कि आज मेरी

मौत का दिन है इसलिये तुम लोग जागते रहो। यह कहकर उनने ईश्वर से प्रार्थना की थी—' हे मेरे परमपिता ! यदि हो सके तो यह कटोरा मेरे पास से हटजाये तो भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जैसा तू चाहता है वैसा '।

प्रार्थना करके वे फिर शिष्यों के पास आये पर शिष्य सो गये थे। उनने पतरस को जगाकर कहा-क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके ! जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है पर शरीर दुर्बल है।

इसके बाद उनने फिर प्रार्थना की कि- हे मेरे परमपिता, यदि यह मेरे पिये बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। इसी प्रकार उनने तीसरी बार भी प्रार्थना की।

उधर म० ईसा का एक विश्वासघाती शिष्य यहूदा अधिकारियों से मिलगया और तीस रुपया लेकर म० ईसा को पकड़वाने को तैयार होगया।

म० ईसा जब तीसरी प्रार्थना कर चुके थे तब महायाजक और मुखिया लोग भीड़के साथ पहुँचे। जब लोग म. ईसाको गिरफ्तार करने लगे तो म.ईसा के शिष्य शमैान पतरस से न देखा गया। उसने पकड़नेवालेपर तलवार का वार किया जिससे उसका दाहिना कान कटगया।

म. ईसाने पतरस को रोककर कहा-खबरदार अपनी तलवार म्यान में कर ! जो कटोरा पिताने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पिऊँ !

इसकेबाद सिपाहियों ने म. ईसाको कसकर बाँधलिया। और म. ईसा के चेले उन्हें छोड़कर भागगये।

१०—न्याय का नाटक

यहूदी लोग म. ईसा को पकड़कर हन्ना के पास लेगये। यह उसवर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। और चाहता था कि किसी न किसी तरह ईसा के प्राण लेना चाहिये।

वहाँ से सब लोग महायाजक के आंगन में जुड़े। और विचार करने लगे कि इस पर क्या दोष लगाया जाय जिससे इसे मौत का दंड दिया जासके।

महायाजक ने म. ईसा के उपदेश और शिष्यों के विषय में पूछा। पर म. ईसाने कहा

मैंने सभाओं और मन्दिरों मे खुलकर उपदेश दिया है इसलिये मुझसे पूछने की कोई ज़रुरत नहीं, सुननेवालो से पूछो कि मैंने क्या कहा है?

यह सुनकर महायाजक के नौकरने म. ईसाको एक तमाचा माँरा और कहा—तू महायाजक के सामने इस तरह बढ़ बढ़कर बात करता है।

तमाचा खाकर भी म. ईसाने कहा—भाई मुझे क्यों मारता है। अगर मैंने झूठ कहा है तो बोल कि मैंने झूठ कहा है। मारनेसे क्या होगा।

म. ईसा के विरुद्ध कोई खास अपराध नहीं था। महायाजक के आदमियों में से ही किसीने कहा—यह अपने को यहूदियों का राजा कहता है। किसीने कहा—यह कहता है कि मैं मन्दिरको गिरासकता हूं और तीनदिन में खड़ा कर सकता हूं।

म. ईसा के व्याख्यानों में जो रूपक और दृष्टान्त रहते थे उनको न समझकर या उनका दूरर्थ करके म. ईसापर दोषारोपण होने लगा। उस समय भी जो उनने कहा उसका इसी तरह दुरुपयोग करके उन्हें दोषी ठहराया गया। और दोष मढ़कर किसीने उन पर थूंका, किसीने तमाचा मारा किसीने घूसा मारा किसीने लात मारी। इस तरह खूब अपमानित करके और कष्ट देकर सब लोग उसे पीलातुस के पास लेगये। पीलातुस उस समय वहाँ का बड़ा हाकिम था जो सम्राट् कैसर की तरफ से नियुक्त किया गया था। प्राण दंड देने का अधिकार उसे ही था।

पीलातुस यहूदी नहीं था और पीलातुस की पत्नी नहीं चाहती थी कि पीलातुस की आज्ञा से एक निरपराध महात्मा माराजाय इसलिये उसने पीलातुस से कहदिया था कि वह एक निरपराध की हत्या अपने सिरपर न ले। पीलातुस को यह भी पता था कि अपने स्वार्थ के कारण यहूदी पुजारी ईसा का प्राण लेना चाहते हैं।

महायाजक तथा अन्य पुजारियों ने यह दोष लगाया था कि वह (म. ईसा) कहता है कि यह यहूदियों का राजा है। इसलिये इस राजद्रोह के अपराध में प्राण दंड मिलना चाहिये।

पीलातुसने म. ईसासे पूछा—क्या तुम अपने को यहूदियों का राजा कहते हो?

म. ईसाने उत्तर दिया मेरा राज्य इस जात का नहीं मेरा राज्य परलोक का है। अगर मेरा राज्य इस जात का होता

तो मेरे सिपाही लड़ते और मैं इस प्रकार गिरफ्तार न होता।

पलितुस को म. ईसा अपराधी न मालूम हुए इसलिए उसने इन्हें छोड़ना चाहा तब सब यहूदी चिल्ला उठे कि यह गलीली सारे यहूदिया में राजद्रोह करता फिरता है और तुम इसे छोड़ते हो ?

पीलातुस को मालूम न था कि म. ईसा गलील प्रान्त के रहने वाले हैं जब उसे यह मालूम हुआ तो वह मन ही मन खुश हुआ। गलील प्रान्त का अधिकारी राजा हेरोदेस था। हेरोदेस से पलितुस की शत्रुता थी पर इस मौकेपर उसने यह शत्रुता भुलादी और यह कहकर कि गलील के अपराधी का न्याय गलील के अधिकारी को ही करना चाहिये, उसने म. ईसाको राजा हेरोदेस के पास भेज दिया।

राजा हेरोदेस इससे बड़ा खुश हुआ वह पलितुस को अपना मित्र समझने लगा। म. ईसा का नाम उसने भी सुन रक्खा था और वह उन्हें देखना चाहता था। पर राजा हेरोदेस ने तभी म. ईसासे बातचीत की पर ऐसी कोई बात न मिली जिससे वह उन्हें दंड देता इसलिये उसने उन्हें पलितुस के पास वापिस भेजदिया।

अब पीलातुस ने लोगों से कहा कि देखो राजा हेरोदेसने भी इसे निरपराध पाया है इस-लिये मैं दंड देना नहींचाहता। तुम लोग चाहो तो अपनी व्यवस्था के अनुसार इसे दंड देलो।

याजकों ने कहा—हमें प्राणदंड देन का अधिकार नहीं है इसलिये तुम ही दंड दो।

पीलातुस ने कहा-तो इसे मैं कोड़े लगवाये देता हूं।

भीड़ ने चिल्लाकर कहा कि नहीं, इसे क्रूस पर ही चढ़ाना चाहिये।

उसी दिन बर अब्बा डाकू भी पकड़ा गया था इसने डाके में हत्याएँ की थीं। पीलातुस ने कहा कि आज पर्व का दिन है और इसदिन एक अपराधी को माफी दी जाती है इसलिये मैं ईसा को माफी देना चाहता हूं।

भीड़ फिर चिल्लाई-बर अब्बा डाकू को छोड़ो ईसा को नहीं ईसा को क्रूस पर ही चढ़ाना चाहिये।

अन्त में विवश होकर पीलातुसने क्रूस पर चढ़ाने के लिये म. ईसा को सिपाहियों के सुपूर्द कर दिया।

क्रूस पर चढ़ाने के पहिले म. ईसा को सिपाहियों ने कोड़े मारे कांटों का मुकुट पहिनाया मज़ाक किया लात घूसे मारे, थूंका, गंदी चीज पीने को दी इस तरह खूब मानसिक और शारीरिक पीड़ा दी।

एक दिन जिसके नाम पर सम्राटों के मुकुट झुके वह एक साधरण आदमी की तरह मार डाला गया तुच्छ से तुच्छ व्यक्तियों ने बड़ा अपमान किया, अन्त में एक आदमी भी साथ देने वाला न रहा।

म. ईसा के बारह शिष्य थे। यहूदा ने तो तीस रुपयों के लोभ में अपने गुरुको बेच दिया था। पर पीछे से उसे पश्चात्ताप हुआ। उसने वे रुपये महायाजक को वापिस कर दिये और फाँसी

लगाकर आत्महत्या करली।

महायाजक ने भी उन खून के रुपयों को रखना पसन्द न किया और एक खेत में गड़वा दिये। जिससे वह खेत खून का खेत कहलाने लगा।

बाकी ग्यारह शिष्यों में सबसे मुख्य पतरस म. ईसाके पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया। पर महायाजक की दासियों ने सिपाहियोंने अब जब पूछा कि क्या तू भी ईसा का चेला है तब उसने कसम खाकर कहा कि मै तो ईसा को जानता भी नहीं।

बाकी दस शिष्यों का कहीं पता न था कि वे कहाँ छिप गये। इस प्रकार ईसा की बड़ी दयनीय मृत्यु हुई। जगत के इस महान सेवक को दुनियाने उसके मरने के बाद पहचाना।

११ क्रूसपर

क्रूस की मौत एक भयंकर मौत है उससे दोनों हाथों और पैरों में निर्दयता से कीलें ठोक दिये जाते हैं और आदमी कई दिन तक तड़प तड़प कर मरता है।

जिस दिन यीशु को क्रूस पर लटकाया उसी दिन दोनो तरफ दो अपराधी और भी लटकाये गये। सिपाही उस समय भी उसका मजाक करते थे। यहूदियों का राजा कहकर चिढ़ाते थ। पास में जो दो आदमी क्रूस पर लटक रहे थे वे भी गाली देते थे। इस प्रकार असह्य मानसिक और शारीरिक पीड़ा से उनकी अंतिम घड़ियाँ कट रही थीं।

कष्ट के मारे म. ईसा बेहोश होगये। उनके एक भक्त

ने पीलातुस से जाकर कहा कि ईसाके प्राण निकल गये मुझे उसकी लाश दे दो। पीलातुस को म. ईसा की तरफ कुछ सहानुभूति थी ही, उसने तुरंत लाश दे दी। उसने जाकर उस लाशको या बेहोश ईसा को एक अच्छी कब्र में जाकर रख दिया और शरीर पर सुगंधित औषधों का लेप कर दिया।

१२ अंतिम दर्शन

कब्र में सुरक्षित रहने से और दवाइयों के लेपसे म. ईसा की बेहोशी दूर होगई।

बेहोशी दूर होने पर वे कब्र से निकल गये। और धीरेधीरे इधर उधर घूमे। कुछ स्त्रियों ने उन्हें देखा। पर वे प्रगट रूपमें न घूमे। कुछ दिन बाद फिर वे अपने चेलों से मिले। इसके तीसरी बार भी वे तिबिरियास की झील के किनारे अपने चेलों को मिले। इसके बाद भय आदि के कारण उनके चेलों ने इस बात को न फैलाया म० ईसा का शरीर भी अधिक समय तक टिकने लायक न रह गया था इसलिये कुछ दिन बाद ही किसी अज्ञात स्थान में उनका देहान्त हो गया। तीसरी बार के बाद न तो वे किसी को दिखाई दिये न उनके शरीर का कुछ पता लगा अंतिम संस्कार भी उनका न होसका। जनता सच्चे जन सेवकों की जो भी दुर्गति करे वह थोड़ी ही है।

ईसा तो मरकर भी अमर होगये और दुनिया की नज़रों में भी अमर होगये पर ऐसे भी जनसेवक कम न होंगे जो सिर्फ ईश्वर की नजर में अमर हुए होंगे जिन्हें दुनिया नहीं जानती।

उत्तरार्द्ध

[महात्मा ईसा के उपदेश]

१ ईश्वर-प्रेम

तू परमेश्वर और अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे जीव और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम कर ।

—मत्ती २२

२ धर्मसार

खून न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, ठगाई न करना, और अपने पिता और माता का आदर करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना ।

—मत्ती १९

३ अहिंसा

१—धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं । उनपर दया की जाएगी ।

—मत्ती ५

२—जो कोई अपने भाई पर क्रोध करे, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा, और जो कोई अपने भाई से कहे-अरे निकम्मा, वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा । जो कोई कहे-अरे मूर्ख ! वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा । यदि तू अपनी भेंट

वेदी पर लाए और वहाँ स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर कुछ विरोध है तो अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ कर चला आ, पहले अपने भाई से मेल कर, तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

—मत्ती ५

३—कहा गया था कि आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत, पर मैं तुमसे कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना, पर जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। जो तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे उसे दोहर भी लेने दे। जो कोई तुझे कोस भर बेगार ले जाना चाहे उसके साथ दो कोस चले जा।

—लूका १७

४—मैं बलिदान नहीं पर दया चाहता हूँ।

५—मैं दया से प्रसन्न हूँ बलिदान से नहीं।

६—यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा, वह यदि न सुने तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, यदि वह उनकी भी न माने तो मंडली से कह दे, यदि वह मंडली की भी न माने तो उसे अन्य जाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। मैं तुम से सच कहता हूँ जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे वह स्वर्ग में बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग पर खुलेगा।

—मत्ती १८

७—अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो, जो तुम से वैर करें उनका भला करो, जो तुम्हें शाप दें उनको आशीश दो और जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिये प्रार्थना करो। जो तेरे एक गाल पर मारे

उसकी ओर दूसरा भी कर दे, और जो तेरी दोहर छीन ले उसको कुर्ता लेने से भी न रोक। --लूका ६

८--यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखो तो तुम्हारी क्या बड़ाई ? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं। --लूका ६

४ शील

१--तुमने सुना है कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना, पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई बुरे मन से किसी स्त्री को देखे वह अपने मन में व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाये तो उसे निकाल कर फेंक दे; क्यों कि तेरे लिये यह भला है कि तेरा एक अंग नाश हो, तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाये तो उसे काट कर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यह भला है कि तेरा एक अंग नाश हो और तेरा सारा शरीर नरक में न जाय। —मत्ती५

२--यह भी कहा गया था कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे वह उसे त्याग-पत्र दे, पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागे वह उससे व्यभिचार कराता है। —मत्ती१९

३--मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। सो वे अब दो नहीं एक तन हैं; इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे। —मत्ती१९

५ अपरिग्रहता

१—अपने लिये पृथ्वी पर धन बटोर कर न रक्खो, जहाँ कूड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहाँ चोर चुराते हैं। पर अपने लिये स्वर्गमें धन बटोर कर रक्खो, जहाँ न कीड़ा न काई बिगाड़ते हैं और न जहाँ चोर चुराते हैं ; क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।

२—तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

—मत्ती ५

३—न सोना न रूपा न ताँबा रखना। मार्ग के लिये न झोली रक्खो न दो कुर्ते न जूते न लाठी लो; क्योंकि मज़दूर के लिये अपना भोजन मिलना चाहिये।

४—परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नोक में से निकल जाना सहज है।

—मत्ती १०

५—धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। फिर तुम से कहता हूं कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के छेद में से निकल जाना सहज है।

—मत्ती १९

६ धर्म जिज्ञासा

१—धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। —मत्ती ५

२—माँगो तो तुम्हें दिया जायगा, ढूँढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। — मत्ती ७

७ धर्म समभाव

१--यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों के लेखों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं पर पूरा करने आया हूँ। ---मत्ती ५

[म. ईसा में भी उस ज़माने तक के सभी धर्मों में आदर भाव था। पहिले के नबियों का वे आदर करते थे। हां, उनका यह कहना अवश्य था और सत्य था कि धर्मों में भी देश-काल के अनुसार परिवर्तन होता है वह होना चाहिये। म. ईसा ने ऐसा ज़रूरी परिवर्तन किया था।]

८ परीक्षकता

१--झूठे नबियों से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं पर अन्तर में फाड़नेवाले भेडिये हैं।

जो झाड़ अच्छा फल नहीं लाता--वह काटा और जलाया जाता है। सो उनके फलों से उन्हें पहिचानोगे। हर एक जो मुझ से 'हे प्रभु हे प्रभु' कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा पर वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।

--मत्ती ७

९ पवित्रता

१--धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं; क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। --मत्ती ५

२--जो मुँह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुँह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। जो कुछ मुँह में जाता है वह पेट में पड़ता है और सन्डास में निकल

जाता है, पर जो कुछ मुँह से निकलता है वह मन से निकलता है और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है, क्योंकि कुचिन्ता, खून, पर-स्त्री-गमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन से ही निकलती है--यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं; पर बिना हाथ धोये भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।

--मत्ती १५

३--यदि तेरा हाथ या तेरे पाँव तुझे ठोकर खिलाये तो उसे काटकर फैंक दे। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ या दो पाँव रहते हुये तू अनन्त आग में डाला जाए, यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाये तो उसे निकाल कर फैंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो आँखे रहते हुये तू नरक की आग में डाला जाय।

--मत्ती १८

४--जब तुम खड़े हुये प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर विरोध हो तो क्षमा करो। —मरकुस ११

१० विश्वास

१--मैं तुमसे सच कहता हूं यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहाँ से सरक कर वहाँ चला जा और वह चला जायगा। --मत्ती १७

२--जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास करके माँगोगे सो पाओगे।

--मत्ती २१

११ नम्रता

१--धन्य हैं वे जो नम्र हैं, वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

--मत्ती ५

२--यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्यों में प्रवेश न करने पाओगे। जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वर्ग के राज में बड़ा होगा।

--मत्ती १८

३--तू मुझे उत्तम क्यों कहता है ? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। --मरकुस १०

१२ सेवा

१--जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने, और जैसे कि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों को छुड़ाने लिये अपने प्राण दें।

--मत्ती २०

२--मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से एक के लिये न किया-वह मेरे लिये भी न किया।

--मत्ती २५

१३ मातृ-पितृ भक्ति

परमेश्वर ने कहा था कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। --मत्ती १५

१४ विश्व-बन्धुत्व

१--तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि अपने पड़ौसी से प्रेम रखना और बैरी से बैर, पर मैं तुम से कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखना और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना

करना। इससे तुम अपने स्वर्गीय पिता के सन्तान ठहरोगे।
--मत्ती ५

२--जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई बहिन और माता है। --मत्ती १२

३--तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना।

१५ सद्व्यवहार

१--तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ....मत्ती २२

२--जब कोई तुझे व्याह में बुलाये तो मुख्य जगह मत बैठ! ऐसा न हो कि उसने तुझसे भी किसी बड़े को नेवता दिया हो। और जिसने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है आकर तुझसे कहे कि इसको जगह दे, और तब तुझे लज्जा खाकर सब से नीची जगह बैठना पड़े। पर जब तू बुलाया जाय तो सब से नीची जगह जा बैठ कि जब वह जिसने तुझे नेवता दिया है, आये तो तुझसे कहे कि--हे मित्र, आगे बढ़कर बैठ तब तेरे साथ बैठनेवालों के सामने तेरी बड़ाई होगी; क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनायगा वह छोटा किया जायगा और जो अपने आपको छोटा बनायगा वह बड़ा किया जायगा।

—लूका १४

१६ दान

१—पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो और न अपने मोती सुअरों के आगे डालो। ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँव तले रौंदे और फिर कर तुमको फाड़ें। —मत्ती

२–मैं तुम से सच कहता हूं कि भण्डार में डालनेवालों में से इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है, क्योंकि सबने अपने बढ़ती में से कुछ कुछ डाला है पर इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।

–मरकुस १२

३-तू दिन का या रात का भोज करे तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, ऐसा न हो कि वे तुझे नेवता दें और तेरा बदला हो जाये। पर जब तू भोज करे तब कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अंधों को बुला तब तू धन्य होगा क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं।

....लूका १४

१७ सहिष्णुता

१- धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताये जाते हैं। स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ....मत्ती ५

२--धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और सतायें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरोध में सब तरह की बुरी बातें कहें तब तुम आनन्द मगन रहो। तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। उन्होंने उन नबियों को जो तुमसे पहिले हुए थे इसी रीति से सताया था। ...मत्ती ५

३–मैं तुम्हें भेड़ों की तरह भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ सो सापों की तरह बुद्धिमान और कबूतरों की तरह भोले बनो। पर लोगों से चौकस रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और

अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा।

—मत्ती १०

१८ निर्भयता

१—जो शरीर को घात करते हैं पर आत्मा को घात नहीं कर सकते उनसे नहीं डरना और उसीसे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों का नरक में नाश कर सकता है।

—मत्ती १०

१९ सुधार

१—विश्राम का दिन मनुष्य के लिये ठहराया गया है न कि मनुष्य विश्राम के दिन के लिये। मनुष्य का पुत्र विश्राम के दिन का भी प्रभु है।

—मरकुस २

२—उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिये उससे पूछा--क्या विश्राम के दिन चंगा करना उचित है? उसने उनसे कहा—ऐसा कौन है जिसकी एक ही भेड़ हो और वह बिश्राम के दिन गड्हे में गिर जाय तो वह उसे पकड़कर न निकाले। मनुष्य का मान भेड़ से कितना बढ़कर है इसलिये विश्राम के दिन भलाई करना उचित है।

— मत्ती १२

२० क्रान्ति

१—कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने पहरावन पर कोई नहीं लगाता क्योंकि वह पैबन्द पहरावन से और कुछ खींच लेता है और फट जाता है।

— मत्ती ९

२—यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को

आया हूँ, मैं मिलाप कराने को नहीं तलवार चलवाने आया हूँ। मैं तो आया हूँ कि मनुष्य को उसके पिता से और बेटी को उसकी माँ से और बहू को उसकी सास से अलग कर दूँ। मनुष्य के वैरी उसके घर के ही लोग होंगे। जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं, और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं, और अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे नहीं चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपना प्राण बचाता है वह उसे खोयेगा और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है वही उसे बचायगा। —मत्ती १०

३ – प्रभु का मार्ग तैयार करो उसकी सड़कें सीधी करो हरएक घाटी भर दी जाएगी और हरएक पहाड़ और टीला नीचा किया जायगा और जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊँचा-नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा। —लूका ३

४--यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर उन सब को जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे निकाल दिया और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियाँ उलट दीं। और उनसे कहा—मेरा घर प्रार्थना का घर कहलायगा पर तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो। —मत्ती २१

५–शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं, इसलिये वे तुमसे जो कुछ कहें वह करना और मानना, पर उनके से काम न करना क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं। वे ऐसे भारी बोझ जिनको उठाना कठिन है--बाँधकर उन्हें मनुष्यों के कंधों पर

रखते हैं पर आप उन्हें उँगली से भी सरकाना नहीं चाहते । वे अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं। वे अपने तावीजों को चौड़े करते और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं, जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें और सभा में मुख्य मुख्य आसन, और बजारों में नमस्कार और मनुष्यों में रब्बी रब्बी कहलाना उन्हें भाता है।

—मत्ती २२

६--हे कपटी शास्त्रियो, तुम पर हाय, तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो । न आप ही उसमें प्रवेश करते हो न प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो ।
(लम्बी फटकार)

—मत्ती २३

२१ निःस्वार्थता

१—यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप को नकारे और अपना क्रूस उठाये और मेरे पीछे हो ले । क्योंकि जो अपने प्राण बचाना चाहे वह उसे खोयेगा और जो कोई मेरे लिये अपने प्राण खोयेगा वह उसे पायगा । यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाये तो उसे क्या लाभ होगा ?

—मत्ती १६

२२ कर्तव्य निर्णय

१--एक चेले ने उससे कहा—हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ । । यीशु ने उससे कहा—तू मेरे पीछे हो ले, और मुरदों को अपने मुर्दे गाड़ने दे ।

--मत्ती ८

२--जैसा तुम चाहते हो लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। --लूका ६

२३ सेवक की अनाथता

१--लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं पर मनुष्य के पुत्र को सिर रखने की भी जगह नहीं। --मत्ती ८

२--नबी अपने देश, अपने कुटुम्ब और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादार नहीं होता। --मरकुस ६

३--कोई नबी अपने देश में मान-सन्मान नहीं पाता। --लूका ४

२६ दीनानाथ

१--फरीसियों ने उसके चेलों से कहा--तुम्हारा गुरु महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है? उसने यह सुनकर उनसे कहा--वैद्य भले चंगों के लिये नहीं पर बीमारों के लिये है। पर तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो कि मैं बलिदान नहीं दया चाहता हूं क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को बुलाने आया हूं। --मत्ती ९

२--जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता कि बड़ी चक्की का पाट उसके

गले में लटकाया जाता और गहरे समुद्र में डुबाया जाता।

--मत्ती १८

३—देखो तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुँह सदा देखते हैं। तुम क्या समझते हो यदि किसी मनुष्य के सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाय तो क्या निन्यानबे को छोड़कर और पहाड़ों पर जाकर उस भटकी हुई को न ढूंढेगा? ....इसी प्रकार तुम्हारे स्वर्गीय पिता की, जो स्वर्ग में हैं—इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक का भी नाश हो।

२५ मेल मिलाप और संगठन

१—धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।

--मत्ती ५

म. ईसा परमेश्वर के पुत्र कहे जाते हैं। बहुत से लोग इस बात का विरोध किया करते हैं क्योंकि परमेश्वर का पुत्र कैसे हो सकता है? बात ठीक है संकुचित अर्थ में परमेश्वर का पुत्र नहीं होता। पर सभी प्राणी परमेश्वर ने पैदा किये हैं—इस दृष्टि से सभी परमेश्वर के पुत्र हैं। इसलिये परमेश्वर का पुत्र होना कोई आपत्ति की बात नहीं है। हां, हम सभी को ईश्वर का पुत्र नहीं कहते क्योंकि इस प्रकार की ईश्वर—पुत्रता सब में एक सरीखी है। किन्तु जो आदमी ईश्वर की आज्ञा के पालन करने और पालन कराने में साधारण मनुष्यों से बहुत आगे बढ़ जाता है वही ईश्वर-पुत्र है। इस दृष्टि से ही म. ईसा ईश्वर-पुत्र थे। इस दृष्टि से अन्य महात्माओं

तीर्थंकर पैगम्बर अवतार आदि—को भी हम ईश्वर-पुत्र कह सकते हैं। बाइबिल में जगह जगह धर्मात्मा बनकर ईश्वर-पुत्र कहलाने का ईश्वर की सन्तान बनने का लोगों से आग्रह किया गया है, इससे मतलब निकलता है कि ईश्वर-पुत्र होने का अर्थ विशेष धर्मात्मा होना है।

३—जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे हुए हैं वहाँ मैं उनके बीच में हूं। —मत्ती १८

२६ धर्म प्रदर्शन

१—चौकस रहो कि तुम मनुष्यों के सामने दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ फल न पाओगे, इसलिये जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही न फुँकवा, जैसा कि ढोंगी लोग सभाओं और गलियों में करते हैं कि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके। पर जब तू दान करे तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है तेरा बायाँ हाथ जानने न पाये।

२—जब तुम उपवास करो तो दम्भियों की तरह तुम्हारे मुहँ पर उदासी न छा जाये क्योंकि वे अपना मुँह मलीन करते हैं कि लोगों को उपवासी दिखाई दें। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना फल पा चुके। पर जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुँह धो जिससे कि तू लोगों को नहीं, पर अपने पिता को जो गुप्त हैं—उपवासी दिखाई दे, तेरा पिता जो गुप्त रूप में देखता है तुझे बदला देगा। —मत्ती ६

२७ प्रचार और प्रचारक

१–तुम पृथ्वी के नमक हो पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाय तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जायगा। वह फिर किसी काम का नहीं केवल यह कि बाहर फेंका जाय और मनुष्यों से रौंदा जाय। तुम जगत का उजाला हो। जो नगर पहाड़ पर बसा है वह छिप नहीं सकता। फिर लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं, पर दीवट पर रखते हैं वह घर के सब लोगों को उजाला देता है। वैसा ही तुम्हारा उजाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की बड़ाई करें। --मत्ती ५

२--इस्राइल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया। मत्ती १५

सत्यभक्त साहित्य

सत्यसमाज के संस्थापक स्वामी सत्यभक्तजी ने धार्मिक सामाजिक राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय तथा जीवन शुद्धि विषयक जो विशाल साहित्य रचा है, जो गद्य, पद्य, नाटक, कथा आदि अनेक रूप में बुद्धि और मन पर असाधारण प्रभाव डालनेवाला है उसे एकबार अवश्य पढ़िये।

१ **सत्यामृत** मानव-धर्म-शास्त्र [दृष्टिकांड] ... १।)

२ **सत्यामृत** [आचारकांड] १॥)

ऐसा महाशास्त्र जो सब धर्मों का निचोड़ कहा जा सकता है और जो अनेक दृष्टियों से मौलिक है।

३ **निरतिवाद**—भारत की परिस्थिति के अनुसार साम्यवाद का रूप... ।=)

४ **सत्य संगीत**—सर्वधर्म समभावी प्रार्थनाओं और जीवन-शोधक गीतों का संग्रह.... ॥=)

५ **शीलवती**—वेश्याओं के सुधार की एक व्यावहारिक योजना -)

६ **विवाहपद्धति**—हिन्दी में ही सर्वधर्म समभावी विवाह पद्धति.... =)

७ **सत्यसमाज और प्रार्थना**.... -)

८ **नागयज्ञ** [नाटक]—राष्ट्रीय एकता का मार्गदर्शक एक ऐतिहासिक नाटक... ॥)

९ **हिन्दू-मुस्लिम-मेल**.... -)॥

१० **आत्म-कथा**—सत्यभक्तजी का अनुभवपूर्ण जीवन-चरित्र १।)

११ **हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद** [उर्दू अनुवाद].... =)

१२ **बुद्ध हृदय**—म. बुद्ध की जीवन घटनाओं पर उन्हीं के विचार.... ।=)

१३ **कृष्णगीता**—आजकल की भी समस्याओं को सुलझाने वाली नई गीता.... ॥)

१४ **अनमोलपत्र**—सत्यभक्तजी के कुछ पत्रों के खास खास अंश -)

१५ **सुलझी हुई गुत्थियाँ**—सत्यभक्तजी द्वारा दिये गये कुछ प्रश्नों के विस्तृत उत्तर.... ।)

१६ **कुरान की झाँकी**—कुरान में आये हुए उपदेशों का संग्रह =)

१७ **जैनधर्म-मीमांसा** [भाग १].... १))

१८ **जैनधर्म-मीमांसा** [भाग २].... १॥)

जैनधर्म में आई हुई विकृति या उसकी अपूर्णता को हटाकर उसका संशोधित रूप।

१९ **न्यायप्रदीप** (हिन्दी में जैन न्याय का मौलिक ग्रन्थ)....१)

२० **सर्व-धर्म-समभाव**.... -)

२१ **ईसाई-धर्म**.... ।-)

मिलने का पता—सत्याश्रम, वर्धा. [सी.पी.]